>

Title: Need to implement the 'Tal Yojana' in Badahiya, Mokama and Nalanda district in Bihar.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): सभापति जी, आज बिहार अपने शताब्दी वर्ष के प्रकाश-उत्सव को मना रहा है। इतिहास ने जो उसे पिछड़ेपन का शिकार बनाया है, आज उसकी कालिमा को वह धोने में लगा हुआ है। मैं आपके माध्यम से सरकार से आग्रह करना चाहता हूं कि शताब्दी वर्ष में मोकामा, बदहिया, नालंदा की एक लाख हैक्टेयर जमीन जो ताल जमीन है, जहां मसूड़ी और चराद की पैदावार होती है। पहले हैलीकोप्टर से वहां दवाई का छिड़काव होता था लेकिन पिछले 15-20 वर्षों से वह व्यवस्था समाप्त हो गयी है। डा. के.एल.राव जो उस समय भारत सरकार के सिंचाई मंत्री थे, उस इलाके में गये थे और वहां प्रत्येक वर्ष हरोहर नदी से पानी आता है और उसी से उसका पटबन होता है लेकिन वह पानी चला जाता है और उसकी कोई निश्चित अवधि नहीं है। के.एल.राव जी ने जो सुझाव दिया कि वहां 12-13 नाले बनाए जाएं और उन नालों के किनारे पौधे और वृक्ष लगाए जाएं। वहां चिड़ियां आकर बैठेंगी और वे चिड़ियां कीड़ाखोरी करेंगी और किसानों की पैदावार की रखवाली करेंगी। हम आपके माध्यम से वर्तमान सरकार से आग्रह करना चाहते हैं कि स्वयं इंदिरा जी कहा करती थीं कि मैं दाल इसलिए मंगाती हूं कि हमारे बच्चों की हड्डियां पुष्ट हों। आज दाल के कारण सरकार भी सकते में रहा करती है। हम आपसे आग्रह करना चाहते हैं कि इतना बड़ा कटोरा नालंदा, बदहिया, मुकामा है, इसे के.एल.राव के जो निर्देश हैं आप उसके आलोक में डेम बनाकर के, पानी को संजोकर के पानी की व्यवस्था करें। इन्हीं तथ्यों की ओर मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।